इकाई 14 काव्य वाचन एवं विश्लेषण : नागार्जुन

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

14.3 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

14.4 उपयोगी पुस्तकें

14.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- नागार्जुन की चार कविताओं की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- नागार्जुन की कविताओं की व्याख्या की दिशाओं को जान सकेंगी/सकेंगे;
- इन कविताओं के माध्यम से प्रगतिवाद आदि की विशिष्टताओं के बारे में समझ सकेंगी/सकेंगे;
- नागार्जुन की काव्य–भाषा को समझने का प्रयास कर सकेंगी/सकेंगे और
- नागार्जुन की शब्द–योजना और शब्दावली को जान सकेंगी/सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

नागार्जुन का जन्म 1911 में दरभंगा जिले के तरउनी नामक गाँव में हुआ था। इनकी पढ़ाई–लिखाई परंपरागत प्राचीन पद्धति से संस्कृत माध्यम से हुई थी। उन्होंने जीवन–भर व्यवस्थित रूप से जीविका का कोई निश्चित माध्यम नहीं अपनाया। इसलिए आर्थिक परेशानी हमेशा बनी रही। वे पारिवारिक रूप से भी सम्पन्न नहीं थे। घुमक्कड़ी के शौक ने उन्हें विविध अनुभवों से जुड़ने का मौका दिया, मगर परिवार के लिए उनका यह स्वभाव कष्टदायक रहा। उनकी मृत्यु 1998 को हुई।

नागार्जुन प्रगतिवादी कवि थे। 87 साल की लंबी उम्र पानेवाले नागार्जुन जवानी से लेकर बुढ़ापे तक 'जनकवि' की छवि से जुड़े रहे। उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी, मातृभाषा मैथिली, दूसरे प्रदेश की भाषा बांगला और शास्त्रीय भाषा संस्कृत में कविताएँ लिखीं। वे हिन्दी के बड़े कवियों में अकेले ऐसे कवि हैं जिसने चार भाषाओं में काव्य–रचना की है। उन्होंने 'यात्री' उपनाम से मैथिली में लिखा था।

काव्य–संग्रह

युगधारा (1953), सतरंगे पंखों वाली (1959), प्यासी पथराई आँखें (1962), तालाब की मछलियाँ (1974), तुमने कहा था (1980), खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1980), हजार–हजार बाँहोंवाली (1981), पुरानी जूतियों का कोरस (1983), रत्नगर्भ (1984), ऐसे भी हम क्या : ऐसे भी तुम क्या!! (1985),

आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने (1986), इस गुब्बारे की छाया में (1990), भूल जाओ पुराने सपने (1994), अपने खेत में (1997)

बुकलेट

शपथ (1948), खून और शोले (1955), चना जोर गरम (1952), प्रेत का बयान (1958)

खंड काव्य : भस्मांकुर (1970)

मैथिली काव्य–संग्रह : चित्रा (1949), पका है यह कटहल (1995), पत्रहीन नग्न गाछ (1967)

बंगला काव्य–संग्रह : मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा (1997)

14.2 चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

14.2 चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

एक

सिन्दूर तिलकित भाल

घोर निर्जन में परिस्थिति ने दिया है डाल!
याद आता तुम्हारा सिंदूर तिलकित भाल!
कौन है वह व्यक्ति जिसको चाहिए न समाज ?
कौन है वह जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज?
चाहिए किसको नहीं सहयोग?
चाहिए किसको नहीं सहवास?
कौन चाहेगा कि उसका शून्य में टकराय यह उच्छ्वास?
हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण
जिसको डाल दे कोई कहीं भी
करेगा वह कभी कुछ न विरोध
करेगा वह कुछ नहीं अनुरोध
वेदना ही नहीं उसके पास
फिर उठेगा कहाँ से निःश्वास
मैं न साधारण, सचेतन जंतु
यहाँ हाँ – ना – किन्तु और परन्तु
यहाँ हर्ष–विषाद–चिंता–क्रोध
यहाँ है सुख–दुःख का अवबोध
यहाँ हैं प्रत्यक्ष औ' अनुमान

यहाँ स्मृति–विस्मृति के सभी के स्थान
तभी तो तुम याद आतीं प्राण,
हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण!
याद आते स्वजन
जिनकी स्नेह से भींगी अमृतमय आँख
स्मृति–विहंगम की कभी थकने न देगी पाँख
याद आता मुझे अपना वह 'तरउनी' ग्राम
याद आतीं लीचियाँ, वे आम
याद आते मुझे मिथिला के रुचिर भू–भाग
याद आते धान
याद आते कमल, कुमुदिनि और तालमखान
याद आते शस्य–श्यामल जनपदों के
रूप–गुण–अनुसार ही रक्खे गये वे नाम
याद आते वेणुवन वे नीलिमा के निलय, अति अभिराम
धन्य वे जिनके मृदुलतम अंक
हुए थे मेरे लिए पर्यंक
धन्य वे जिनकी उपज के भाग
अन्न–पानी और भाजी–साग
फूल–फल औ' कंद–मूल, अनेक विध मधु–मांस
विपुल उनका ऋण, सधा सकता न मैं दशमांश
ओह, यद्यपि पड़ गया हूँ दूर उनसे आज
हृदय से पर आ रही आवाज–
धन्य वे जन, वही धन्य समाज
यहाँ भी तो हूँ न मैं असहाय
यहाँ भी हैं व्यक्ति औ' समुदाय
किन्तु जीवन भर रहूँ फिर भी प्रवासी ही कहेंगे हाय!
मरूँगा तो चिता पर दो फूल देंगे डाल
समय चलता जाएगा निर्बाध अपनी चाल
सुनोगी तुम तो उठेगी हूक

मैं रहूँगा सामने (तसवीर में) पर मूक

सांध्य नभ में पश्चिमांत–समान

लालिमा का जब करुण आख्यान

सुना करता हूँ, सुमुखि उस काल

याद आता तुम्हारा सिंदूर तिलकित भाल।

(1943, 'सतरंगे पंखोंवाली')

सन्दर्भ और प्रसंग

'सिन्दूर तिलकित भाल' शीर्षक कविता 'सतरंगे पंखोंवाली' (1959) काव्य–संग्रह में संगृहीत है। इस कविता में प्रवासी व्यक्ति की मानसिक पीड़ा का चित्रण किया गया है। रोजी–रोटी के लिए अपना गाँव–घर छोड़कर लोग परदेश चले जाते हैं। कमाने–खाने वाले वर्ग का व्यक्ति निरंतर परेशानियाँ झेलता हुआ कई तरह की मानसिक पीड़ा से गुजरता है। उसे अपने घर–परिवार, गाँव–गिराँव, भाषा–बोली, खान–पान की बहुत याद आती है।

व्याख्या

'सिन्दूर तिलकित भाल' शीर्षक कविता में नागार्जुन कहते हैं कि जीवन की परिस्थितियों ने मुझे घोर निर्जन में रहने को मजबूर किया है। ऐसा नहीं है कि इस जगह पर लोग नहीं रहते हैं, मगर यहाँ हमारे लोग नहीं रहते हैं। इसलिए मुझे बार–बार लगता है कि मैं निर्जन में रह रहा हूँ।

कवि अपनी पत्नी को याद करते हुए कहता है कि मुझे सिन्दूर से चमकता हुआ तुम्हारा ललाट याद आता है। इतनी दूर रहकर तुम्हें याद करता हूँ तो तुम्हारी वही छवि मुझे याद आती है कि तुमने अपनी माँग में सिन्दूर भर रखा है और ललाट पर सिन्दूर की बिंदी लगा रखी है।

भला बताओ कि ऐसा कौन होगा जिसे अपने समाज की जरूरत नहीं होती होगी? ऐसा कौन होगा जिसे एक–दूसरे से काम नहीं पड़ता होगा? ऐसा कौन होगा जिसे परस्पर सहयोग की जरूरत नहीं होती होगी? ऐसा कौन होगा जिसे अपने लोगों के साथ रहने की इच्छा नहीं होती होगी या दाम्पत्य–सुख की जरूरत नहीं पड़ती होगी? भला कौन चाहेगा कि तनाव के क्षणों में वह अकेला रहे! उसकी साँसें सूनेपन से टकराकर लौट जाएँ!

मैं कोई पत्थर तो हूँ नहीं कि संवेदनहीन हो जाऊँ? पत्थर को कहीं भी डाल दो, वह विरोध नहीं करेगा, कुछ अनुरोध भी नहीं करेगा क्योंकि वेदना को सहेजने या समझने की क्षमता उसके पास है ही नहीं! इसलिए तनाव में डूबी हुई लंबी साँसें वह नहीं ले सकता। मगर, मैं तो पत्थर हूँ नहीं। कवि होने के कारण साधारण लोगों की अपेक्षा कुछ ज्यादा संवेदनशील हूँ। मेरे पास ढेर सारी मानसिक उलझने हैं। मैं सपाट तरीके से नहीं सोच सकता। मेरे पास 'हाँ' भी है और 'ना' भी!

कठिन शब्द

सिन्दूर तिलकित भाल – स्त्री का सिन्दूर से सजा ललाट, **काज** – काम, जरूरत, **सहवास**– एक साथ रहना, दाम्पत्य–सुख, **शून्य**– अकेलापन, **उच्छ्वास**– लंबी साँस छोड़ना, **पाषाण**– निर्जीव, संवेदनहीन, **सचेतन जन्तु**– सम्वेदनशील मनुष्य, **हर्ष–विषाद**– खुशी और दुःख, **अवबोध**–समझ, एहसास, **प्रत्यक्ष औ' अनुमान**– ज्ञान के दो स्रोत **स्मृति–विस्मृति**– यादें और भुलावे, **स्वजन–**अपने लोग, **स्मृति–विहंगम**–यादें मानो पंछी हैं, **तरउनी ग्राम**– नागार्जुन के गाँव का नाम, **रुचिर भू–भाग**– सुंदर ग्रामीण क्षेत्र, **कुमुदिनि**– कमल का एक रूप, **तालमखान**– मखाना से भरे हुए तालाब, **शस्य–श्यामल**–फसलों की गहरी हरियाली,**वेणुवन**– बाँस के जंगल, **नीलिमा के निलय** – बाँस के जंगल नीले रंग के घर की तरह थे, **अति अभिराम**–अत्यधिक सुंदर, **मृदुलतम अंक–** वात्सल्य से भरी कोमल गोद, **पर्यंक** –पलंग, **भाजी–साग** –सब्जी और साग, **अनेकविध**–कई तरह के **मधु–मांस**– शराब और मांस,**दशमांश**– दस प्रतिशत, **प्रवासी**–बाहरी व्यक्ति, **पश्चिमांत–समान –** पश्चिम दिशा का अंतिम हिस्सा, **करुण आख्यान–**करुणा–दया से भरी हुई कथा, **सुमुखि**–सुंदर मुख वाली (पत्नी)

'किन्तु' भी 'परन्तु' भी! इसी तरह मैं ढेर सारी द्वंद्वात्मक मनःस्थितियों से गुजर रहा हूँ। हर्ष–विषाद, चिंता–क्रोध, सुख–दुःख के एहसास आदि के बीच डूबता–उतराता हुआ जीवन जी रहा हूँ। यहाँ प्रत्यक्ष से कुछ जानकारियाँ मिलती हैं तो कुछ के लिए अनुमान का सहारा लेना पड़ता है। यहाँ की जानकारी तो प्रत्यक्ष है, मगर तुम लोगों के बारे में जानने के लिए अनुमान से ही काम चलाना पड़ता है। यादों से कभी सहारा मिलता है, तो कभी भूल जाने से राहत मिलती है! इतनी उलझनों के बीच हूँ, तभी तो तुम्हारी बहुत याद आती है। तुम्हें याद करके मानो मेरे प्राण सहारा पा जाते हैं। मैं इंसान हूँ, पत्थर नहीं!

नागार्जुन आगे कहते हैं कि मुझे अपने लोगों की बहुत याद आती है। स्नेह के आँसुओं से भीगी हुई उन लोगों की अमृतमय आँखें याद आती हैं। वे आँखें मेरे स्मृति–विहंगम के पंखों को कभी थकने नहीं देंगी। मुझे अपना 'तरउनी' गाँव याद आता है। वहाँ की लीचियाँ याद आती हैं। वहाँ के आम याद आते हैं। मेरी मातृभूमि मिथिला के सुंदर भू–भाग याद आते हैं। धान की लहलहाती फसलें याद आती हैं। वहाँ के ताल–तलैया में कमल और कुमुदिनी के फूल खिलते हैं। उन तालों में मखाना की खेती होती है। ये सब याद आते हैं। मिथिला के विभिन्न क्षेत्र हरी–भरी फसलों से ढँके होते हैं। ऐसा लगता है कि उन क्षेत्रों के नाम उनके रूप और गुण के अनुसार रखे गए हैं। वहाँ बाँस के जंगल हैं। दूर से देखो तो वे जंगल नीलिमा के घर की तरह बहुत सुंदर लगते हैं। इन सबकी बहुत याद आती है।

मैं उन सबके प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनकी वात्सल्य भरी कोमल गोद का सुख मिला था। माँ–बाप के अलावा न जाने कितने लोगों ने गोद में रखकर खेलाया था और मैं उन गोदों में पलंग का सुख पाते हुए सो गया था। गाँव में रहते हुए न जाने किन–किन लोगों की उपज से बना भोजन ग्रहण करने का मौका मिला। अन्न–पानी–साग–सब्जी–मांस–मदिरा के अलावा क्या–क्या गिनवाऊँ? उन सबके प्रति आभार प्रकट करता हूँ! उन सबका मुझ पर कर्ज है। इस कर्ज का दस प्रतिशत भी चुकाने की क्षमता मुझमें नहीं है। मेरे लिए अफसोस की बात है कि मैं इन सबसे दूर आ गया हूँ। मगर मेरा मन बार–बार कहता है कि वे लोग और वह समाज धन्य हैं!

यद्यपि यहाँ भी रहते–रहते एक तरह का समाज बन गया है। यहाँ भी आपस में प्रेम–व्यवहार हो गया है। मैं यहाँ असहाय नहीं हूँ। लोगों से मित्रता है और आपस में सहयोग की भावना है। फिर भी एक दंश तो बना ही रहता है कि मैं बाहर का आदमी हूँ! मैं जीवन भर यहाँ रह जाऊँ तब भी लोग मुझे 'प्रवासी' यानी बाहरी समझेंगे और इसी तरह के नाम से याद करेंगे! यदि यहीं मर गया तो दो–चार फूल लोग डाल देंगे और फिर भूल जाएँगे! समय गुजरता जाएगा और मेरी कहीं भी निशानी नहीं होगी! मेरे न होने का सामाचार जब गाँव पर तुम सुनोगी तो रो–बिलख कर रह जाओगी। तुम्हारे हृदय में हूक लग जाएगी कि मेरे अंतिम समय में तुम लोगों के साथ मैं नहीं था! मेरी तस्वीर को तुम बार–बार देखोगी, लेकिन मैं तस्वीर में से तुम्हें चुपचाप देखता रहूँगा!

शाम के समय पश्चिम दिशा में जब सूरज डूबता है तो लालिमा का एक करुण आख्यान मुझे सुनाई देता है। डूबता हुआ सूरज और लालिमा लिए हुए पश्चिम का आकाश! इस दृश्य में मुझे अपने जीवन के अंत और सिन्दूर लगे तुम्हारे ललाट का ध्यान हो आता है।

काव्य सौष्ठव

- यह कविता प्रवास की पीड़ा को व्यक्त करती है।
- अपने जन्म–स्थान और परिवेश के प्रति स्वाभाविक लगाव को सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

- रोजी–रोजगार की मजबूरी कमाने–खानेवाले को प्रवासी बनने को मजबूर करती है। प्रवास का अर्थ है 'बाहरी' बनकर रहना। यह भावबोध जीवन के प्रति आत्मविश्वास को कमजोर कर देता है।
- 10, 17, 21, 24 और 31 मात्राओं की पंक्तियों की सहायता से इस कविता का निर्माण हुआ है। इसमें 17 मात्राओं की पंक्तियाँ सबसे ज्यादा हैं। कवि ने इन पंक्तियों को रखने का कोई निश्चित क्रम नहीं अपनाया है। उसका प्रयास है कि कहन शैली में पूरी कविता का प्रवाह बना रहे!

विशेष

नागार्जुन ने इस कविता के माध्यम से बताना चाहा है कि मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा होती है कि वह अपनों के बीच जीवन व्यतीत करे। जीवन की परिस्थितियाँ उसे प्रवास को मजबूर करती हैं, मगर बाहर की दुनिया में उसे आत्मीयता का अभाव हमेशा महसूस होता है।

दो

अकाल और उसके बाद

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद

धुआँ उठा आँगन के ऊपर कई दिनों के बाद

चमक उठीं घर भर की आँखें कई दिनों के बाद

कौए ने खुजलाईं पाँखें कई दिनों के बाद

(1952, 'सतरंगे पंखोंवाली')

सन्दर्भ और प्रसंग

'अकाल और उसके बाद' शीर्षक कविता 'सतरंगे पंखोंवाली' (1959) काव्य–संग्रह में संगृहीत है। इस कविता का प्रसंग अकाल की घटना से जुड़ा है। अकाल से बेबस ग्रामीण जीवन के सांकेतिक दृश्य इस कविता में व्यक्त हुए हैं। यहाँ मनुष्य को सामने रखे बगैर अकाल की भयानकता को प्रस्तुत किया गया है।

कठिन शब्द

चक्की– जाँता, हाथ से अनाज पीसनेवाली चक्की, **भीत**– दीवार, **गश्त** –इधर से उधर कदमताल करना, **शिकस्त**–पराजय, हार जाना, **पाँखें** – पंख, डैना

व्याख्या

नागार्जुन ने आठ पंक्तियों की इस कविता को दो हिस्से में संरचित किया है। चार–चार पंक्तियों के इन दो टुकड़ों में व्यवस्थित तरीके से बातें रखी गयी हैं। पहले टुकड़े में 'अकाल' है और दूसरे टुकड़े में 'उसके बाद' का चित्रण है। वैसे तो अकाल के अनेक आयाम हैं। इस कविता में 'दाने' अर्थात् अनाज के माध्यम से, अकाल और अकाल के बाद की स्थिति की, कुछ झाँकियाँ हमारे सामने रखी गयी हैं। इस कविता के प्रतीक और संकेत महत्त्वपूर्ण हैं।

पहली चारों पंक्तियों की शुरुआत इस टुकड़े से होती है – 'कई दिनों तक'। इसी तरह अंतिम चारों पंक्तियों की समाप्ति इस टुकड़े से होती है – 'कई दिनों के बाद'। इस कविता की प्रत्येक पंक्ति में 27 मात्राएँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में ऊपर के दो टुकड़ों (क्रमशः 8 और 11 मात्राएँ) की आवृत्ति को देखकर कहा जा सकता है कि कवि के पास कुल मिलाकर बहुत कम जगह बची है अपनी बात कहने के लिए! कविता सशक्त हो पायी है अपनी प्रतीकात्मकता और संकेतात्मकता के कारण।

पहली चार पंक्तियों में नागार्जुन बताते हैं कि अकाल का हाल यह है कि कई दिनों तक उस घर में चूल्हा जलने की नौबत नहीं आयी। घर में पकाकर खाने लायक कुछ था ही नहीं! चक्की भी कई दिनों तक उदास रही क्योंकि घर में पीसने के लिए अनाज था ही नहीं! चूल्हा और चक्की को लक्ष्मी मानते हैं। उन्हें पवित्र मानते हैं। मगर अकाल ने ऐसी बेबसी दे दी है कि चूल्हे–चक्की के पास कानी कुतिया रोज सोती रही, मगर उसे हटाने का ख्याल किसी के मन में नहीं आया। ऐसा पहले तो नहीं होता था! जब घर में अनाज ही नहीं था, तब रात में दीया–बत्ती जलाने की नौबत भला कहाँ से आती! इसके लिए तेल की जरूरत थी। तेल की बारी तो अनाज के बाद आती है! दीया–बत्ती नहीं जली तो रात में कीड़े–फतिंगे भी नहीं आए। छिपकलियाँ दीवारों पर कई दिनों तक घूमती रहीं कि खाने के लिए कोई कीड़ा–फतिंगा मिल जाए! ऐसी ही स्थिति घर के चूहों की भी रही। वे बार–बार तलाशते रहे कि कहीं कुछ मिल जाए, मगर उन्हें हार के सिवा कुछ न मिला।

अगली चार पंक्तियों में घर के अंदर अनाज आने के बाद के दृश्य हैं। कई दिनों के बाद घर में कुछ अनाज आया। चूल्हा जल उठा और आँगन से धुआँ उठा। नागार्जुन लिखते हैं कि 'घर–भर की आँखें' चमक उठीं। ये आँखें किनकी हैं? ये आँखें कुतिया, छिपकलियों और चूहों की तो हैं ही इन आँखों में वे आँखें भी शामिल हैं जो घर के मनुष्यों की हैं। पूरी कविता में मनुष्यों का जिक्र इन आँखों के माध्यम से ही आया है। सांकेतिकता की ऐसी क्षमता इस कविता को महत्त्वपूर्ण बनाती है। और अंत में नागार्जुन लिखते हैं कि कौए ने कई दिनों के बाद, कुछ जूठन खाकर अपनी चोंच को पोंछने के लिए, अपने पंखों को खुजलाया है!

काव्य सौष्ठव

- अकाल पर इतनी सटीक कविता हिन्दी में कम ही लिखी गयी है।
- अकाल की भयावहता को भाषा की भयावहता के बिना प्रस्तुत कर देना इस कविता की सफलता है।
- शोक का सहारा लिए बगैर यह कविता करुणा का आख्यान रचती है।
- यह कविता कुछ घरेलू विवरणों के माध्यम से मनुष्य की त्रासदी को व्यक्त कर रही है।
- 27 मात्राओं की पंक्तियों से इस कविता का निर्माण हुआ है। 16 और 11 मात्रा पर यति है। अंत में लघु है। यह सरसी छंद है। चौपाई का एक चरण (16 मात्रा) और दोहा का सम चरण (11 मात्रा) मिलाने से सरसी छंद बनता है।

विशेष

अकाल मनुष्य के जीवन को खतरे में डाल देता है। मनुष्य के आस–पास रहनेवाले जीव–जंतु भी इस भयावह समस्या से ग्रस्त होते हैं।

तीन

बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद

अब की मैंने जी भर देखी

पकी–सुनहली फसलों की मुसकान

–बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद

अब की मैं जी–भर सुन पाया

धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान

–बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद

अब की मैंने जी–भर सूँघे

मौलसिरी के ढेर–ढेर से ताजे–टटके फूल

–बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद

अब की मैं जी–भर छू पाया

अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल

–बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद

अब की मैंने जी–भर तालमखाना खाया

गन्ने चूसे जी–भर

–बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद

अब की मैंने जी–भर भोगे

गंध–रूप–रस–स्पर्श सब साथ–साथ इस भू पर

–बहुत दिनों के बाद

(1958, 'सतरंगे पंखोंवाली')

सन्दर्भ और प्रसंग

'बहुत दिनों के बाद' शीर्षक कविता 'सतरंगे पंखोंवाली' (1959) काव्य–संग्रह में संगृहीत है। कवि बहुत दिनों के बाद अपने गाँव लौटा है। वह लम्बे समय तक गाँव से बाहर रहा है। गाँव लौटने पर उसे अपनी पुरानी अनुभूतियों को एक बार फिर महसूस करने का मौका मिला है।

व्याख्या

नागार्जुन 'बहुत दिनों के बाद' शीर्षक कविता में अपने गाँव से लगाव को कई तरह से प्रकट करते हैं। जीवन की परिस्थितियों के कारण घर से दूर चले जाने की मजबूरी कई लोगों के सामने आती है। बाहर जाकर हम कई तरह की सफलताएँ भी प्राप्त करते हैं। कई बार हमारी जिन्दगी में समृद्धि भी आती है, मगर अपनी जगह का आकर्षण हमारे भीतर बना हुआ रहता है।

नागार्जुन इन्हीं परिस्थितियों के बीच अपने गाँव को लौटे हैं और वे कह रहे हैं कि बहुत दिनों के बाद मैंने सुनहले रंग की पकी फसलों को मुस्कुराते हुए जी–भर के देखा है। यह कवि का लगाव है कि उसे फसलें मुस्कुराती हुई जान पड़ती हैं!

इसी तरह की बात कवि आगे भी कहता है कि बहुत दिनों के बाद मैंने धान कूटती हुई लड़कियों के कोकिल–कंठ से गीत सुने हैं। उन गीतों को मैं जी–भर सुनता रहा। बहुत दिनों के बाद मैंने मौलसिरी के ताजे–ताजे फूलों की जी–भर सूँघा है। बहुत दिनों के बाद मैंने अपने गाँव के कच्चे रास्तों की धूल को जी–भर कर छुआ है। मुझे यह धूल चंदन के रंग की मालूम पड़ती है। बहुत दिनों के बाद मैंने ताल में पैदा हुए मखाने को जी–भर कर खाया है, जी–भर कर गन्ने चूसे हैं।

अब की बार बहुत दिनों के बाद मैंने अपने गाँव की धरती पर आकर जाना है कि गंध, रूप, रस, शब्द और स्पर्श को जी–भर कर भोगने का असली मतलब क्या होता है? मैंने 'मौलसिरी' से गंध को, 'पकी–सुनहली फसलों' से रूप को, 'तालमखाना और गन्ने' से रस को, 'किशोरियों की कोकिल–कंठी तान' से शब्द को और 'चन्दनवर्णी धूल' से स्पर्श को महसूस किया है। इन्द्रियों की सार्थकता मानो यहीं लौटकर महसूस हुई है।

कठिन शब्द

कोकिल–कंठी, **तान**–कोयल की सुरीली आवाज, **टटके फूल**– ताजे फूल, **गँवई पगडंडी –** गाँव के कच्चे रास्ते, **चन्दनवर्णी धूल**–चन्दन के रंग की धूल, **तालमखान –** तालाब में पैदा हुआ मखाना, **गन्ध–रूप–रस–शब्द–स्पर्श** – पाँच इन्द्रियों से जुड़े गुणय नाक से गंध, आँख से रूप, जीभ से रस, कान से शब्द और त्वचा से स्पर्श का सम्बन्ध है।

काव्य सौष्ठव

- प्रवासी के जीवन से निकल चुकी आत्मीयता को यह कविता चित्रित करती है।
- अपना परिवेश हमारे प्रत्येक पक्ष से स्वाभाविक रूप से जुड़ जाता है।
- इस कविता की छंद–योजना में चौपाई के एक चरण (16 मात्रा) तथा दोहा के सम चरण (11 मात्रा) का उपयोग ज्यादा हुआ है। दोनों को जोड़कर 27 मात्राओं की पंक्तियाँ भी रखी गयी हैं, जिसे सरसी छंद कहते हैं।

विशेष

नागार्जुन की यह कविता सुगठित है। अनुभूतियों के पाँच रूपों और स्रोतों के परम्परागत आधार पर रची गयी यह कविता कुल छह चरणों में है। पाँच में पाँचों इन्द्रियाँ इस क्रम से सक्रिय हैं– आँख, कान, नाक, त्वचा और जीभ। छठे चरण में उपसंहार है।

चार

कालिदास

कालिदास सच–सच बतलाना!

इंदुमती के मृत्युशोक से

अज रोया या तुम रोए थे

कालिदास सच–सच बतलाना!

शिवजी की तीसरी आँख से

निकली हुई महाज्वाला में

घृतमिश्रित सूखी समिधा–सम

कामदेव जब भस्म हो गया

रति का क्रंदन सुन आँसू से

तुमने ही तो दृग धोए थे?

कालिदास सच–सच बतलाना

रति रोई या तुम रोए थे?

वर्षा ऋतु की स्निग्ध भूमिका

प्रथम दिवस आषाढ़ मास का

देख गगन में श्याम घन–घटा

विधुर यक्ष का मन जब उचटा

खड़े–खड़े तब हाथ जोड़कर

चित्रकूट के सुभग शिखर पर

उस बेचारे ने भेजा था

जिनके ही द्वारा संदेशा

उन पुष्करावर्त मेघों का

साथी बनकर उड़नेवाले

कालिदास सच–सच बतलाना

परपीड़ा से पूर–पूर हो

थक–थककर औ' चूर–चूर हो

अमल–धवल गिरि के शिखरों पर

प्रियवर, तुम कब तक सोए थे?

रोया यक्ष कि तुम रोए थे?

कालिदास सच–सच बतलाना!

(1938, 'सतरंगे पंखोंवाली')

सन्दर्भ और प्रसंग

'कालिदास' शीर्षक कविता 'सतरंगे पंखोंवाली' (1959) काव्य–संग्रह में संगृहीत है। 'नागार्जुन रचनावली' के अनुसार यह नागार्जुन की तीसरी कविता है। पहली कविता है 'निर्वासित' और दूसरी है 'बेकार'। नागार्जुन की शुरुआती कविता होने के बावजूद यह एक प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण कविता है। नागार्जुन ने अपने प्रिय कवि कालिदास से कुछ प्रश्न पूछे हैं। इन प्रश्नों का सारांश यह है कि साहित्य में वर्णित भावनाओं का सम्बन्ध स्वयं रचनाकार से किस तरह का होता है? रचना में यदि दुःख वर्णित है तो क्या इसका सम्बन्ध कवि के निजी दुःख से होता है?

व्याख्या

नागार्जुन की औपचारिक शिक्षा संस्कृत माध्यम से हुई थी। उनके प्रिय कवि थे कालिदास। संस्कृत से उनका रिश्ता जीवन भर बना रहा। उन्होंने संस्कृत में कुछ कविताएँ भी लिखी थीं। नागार्जुन अपने प्रिय कवि कालिदास से उनके ही साहित्य का हवाला देकर कुछ प्रश्न पूछते हैं। वे कहते हैं कि तुम्हारे महाकाव्य 'रघुवंशम' में अज का विलाप है। राम के दादा अज अपनी पत्नी इंदुमती की मृत्यु पर बहुत रोए थे। कालिदास ने इस प्रसंग का मार्मिक चित्रण किया है। नागार्जुन पूछते कि हे मेरे प्रिय और आदरणीय कवि कालिदास! सच–सच बतलाओ कि इस विलाप से तुम्हारा भी कुछ

कठिन शब्द

इन्दुमती– राम के दादा अज की पत्नी, **अज –** राम के दादा और दशरथ के पिता, **शिवजी की तीसरी आँख**– भगवान् शंकर क्रोध में अपनी तीसरी आँख खोलते हैं, **महाज्वाला**–शंकर की तीसरी आँख से निकली हुई आग, **घृत–मिश्रित सूखी समिधा–सम** – सूखी हुई हवन–सामग्री में घी लपेट दिया गया, **कामदेव**– प्रेम का देवता, **रति –** कामदेव की पत्नी, **दृग धोये थे** – आँसुओं से आँखों का धुल जाना **स्निग्ध भूमिका –** नमी से भरी पृष्ठभूमि, **विधुर यक्ष**–वियोगी यक्ष, **सुभग शिखर**– सुंदर पर्वत–शिखर **पुष्करावर्त मेघों** –मेघों के वंश – पुष्कर, आवर्तक आदि, **पर पीड़ा**– दूसरे की तकलीफ, **पूर–पूर –** डूब जाना, भर जाना

रिश्ता था क्या? क्या तुमने भी इस तरह का दुःख अपने जीवन में उठाया था? यदि नहीं तो फिर ऐसा चित्रण तुम कैसे कर पाए?

आगे वे कालिदास के महाकाव्य 'कुमारसंभवम' के एक प्रसंग की चर्चा करते हैं कि भगवान् शंकर की तीसरी आँख से आग निकली थी और कामदेव जल कर राख हो गया था। जैसे हवन की सूखी हुई सामग्री घी से मिश्रित होकर तेजी से जलती है, वैसे ही कामदेव धधक कर जल उठा था। कामदेव की पत्नी रति चीत्कार कर रो उठी थी। उसका विलाप तुम कैसे लिख पाए। ऐसा लगता है कि इस तरह का विलाप तुमने भी कभी–न–कभी किया था और आँसुओं के जल से तुमने अपनी आँखें धोयी थीं। सच–सच बतलाना कि तुम्हारी कविता में रति रो रही थी कि तुम रो रहे थे?

कविता के तीसरे चरण में नागार्जुन कालिदास के गीतिकाव्य 'मेघदूतम' के प्रसंग उठाते हैं। वे कहते हैं कि बेचारा यक्ष रामगिरि आश्रम में सजा काट रहा था। उसे एक वर्ष तक वहीं रहने की सजा दी गयी थी। आठ महीने बीत जाने के बाद जब आषाढ़ का महीना आया तब वर्षा ऋतु की नमी से भरी हवा चली। वर्षा की स्निग्ध भूमिका बनने लगी। आकाश में काली घटाएँ छाने लगीं, जिन्हें देखकर वियोगी यक्ष का धैर्य डोल गया। अब तो उसने अपनी प्रेम–पीड़ा पर नियंत्रण बनाए रखा था, मगर बरसात के परिवेश ने उसके मन को उचाट कर दिया। उसका दिमाग बहक गया। उस बेचारे यक्ष ने भावातिरेक में आकर चित्रकूट के उस सुंदर शिखर पर खड़े होकर हाथ जोड़ लिए। उसने बादलों से कहा कि मेरे संदेश मेरी प्रिया तक पहुँचा दो! उसने बादलों को घर जाने के रास्ते भी बताए और प्रिया तक पहुँचाने वाले संदेश भी! वे मेघ पुष्कर और आवर्तक वंश के थे, ऐसा भावुक यक्ष ने पहचाना था!! हे कवि–कुलगुरु महाकवि कालिदास! उन बादलों के साथी की तरह मानो तुम साथ–साथ थे। यक्ष की पीड़ा तुम्हारे लिए पराई पीड़ा थी, मगर तुम तो उसमें पूरी तरह डूबे हुए मालूम पड़ते हो। तुम्हारी कविता इस बात की गवाही देती है। यह बताओ कि यक्ष की पीड़ा की थकावट से चूर–चूर होकर पर्वत के स्वच्छ शिखरों पर तुम कितनी देर तक या कितने दिनों तक सोये रहे थे? लगता है कि यक्ष की तरह तुम भी कभी अकेलेपन की यातना से गुजरे थे। सच–सच बतलाना कि तुम्हारी कविता में रोनेवाला यक्ष था या खुद तुम थे!

काव्य सौष्ठव

- यह कविता कवि के अनुभव को कविता में तलाशने की कोशिश है।
- एक तरह से इस कविता में इस बात का पक्ष लिया गया है कि अनुभूति की निजता के बिना प्रभावशाली अभिव्यक्ति सम्भव नहीं है।
- यहाँ 'परकाया प्रवेश' जैसे सिद्धांतों पर भी विचार की गुंजाइश है। दूसरे के व्यक्तित्व में समाकर उसके भावों को समझने की कोशिश को 'परकाया प्रवेश' कहते हैं। मानो कवि अपने पात्रों के व्यक्तित्व में प्रवेश करके उनकी अनुभूतियों को समझता है। पूरी कविता में 16–16 मात्राओं की पंक्तियों का उपयोग हुआ है।

बोध प्रश्न –1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. 'सिन्दूर तिलकित भाल' कविता में प्रवासी की उपेक्षा को किस रूप में व्यक्त किया गया है ?

.....

.....

.....

2. 'अकाल और उसके बाद' कविता के छंद–विधान पर विचार करें?

.....

.....

.....

3. 'बहुत दिनों के बाद' कविता की रचनात्मक योजना को स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

4. 'कालिदास' कविता में काव्य–रचना की किस प्रक्रिया पर विचार किया गया है?

.....

.....

.....

बोध प्रश्न –2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. 'सिन्दूर तिलकित भाल' शीर्षक कविता किस पुस्तक में है?
क) युगधारा ख) सतरंगे पंखों वाली ग) प्यासी पथराई आँखें घ) हजार–हजार बाँहोंवाली

ii. 'कालिदास' किस काव्य–संग्रह की कविता है?
क) सतरंगे पंखों वाली ख) युगधारा ग) प्यासी पथराई आँखें घ)पुरानी जूतियों का कोरस

iii. 'सिन्दूर तिलकित भाल' शीर्षक कविता में कवि ने अपने गाँव का क्या नाम बताया है ?
क) चंद्रगहना ख) तरउनी ग) सोनबरसा घ) विसपी

iv. गँवईं पगडंडी की धूल को नागार्जुन ने क्या कहा है?
क) रजतवर्णी ख) स्वर्णवर्णी ग) हीरकवर्णी घ) चन्दनवर्णी

v. नागार्जुन को किस क्षेत्र के 'रुचिर भू–भाग' याद आते है?
क) मगध ख) संथाल परगना ग) मिथिला घ) पूर्वांचल

vi. 'सतरंगे पंखोंवाली' काव्य–संग्रह का प्रकाशन कब हुआ था ?
क) 1953 ख) 1959 ग) 1957 घ) 1970

vii. 'अकाल और उसके बाद' कविता में कितनी मात्राओं की पंक्तियों का उपयोग हुआ है ?
क) 21 ख) 31 ग) 24 घ) 27

viii. 'कालिदास' कविता में कितनी मात्राओं की पंक्तियों का उपयोग हुआ है?
क) 16 ख) 12 ग) 17 घ) 28

ix. नागार्जुन का जन्म कब हुआ था?
क) 1909 ख) 1910 ग) 1911 घ) 1912

x. नागार्जुन की मृत्यु कब हुई थी?
क) 1998 ख) 1985 ग) 2002 घ) 1998

xi. नागार्जुन मूलतः किस धारा के कवि माने जाते हैं?
क) छायावादी ख) प्रयोगवादी ग) हालावादी घ) प्रगतिवादी

14.3 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. 'सिन्दूर तिलकित भाल' कविता में प्रवासी की उपेक्षा को व्यक्त करते हुए कहा गया है कि यदि मैं यहाँ जीवन भर भी रह जाऊँ तब भी लोग मुझे 'प्रवासी' ही समझेंगे! लोग यही कहेंगे कि 'बाहरी' है या 'बिहारी' है। जीवन व्यतीत करते हुए यदि यहीं मर गया तो लोग सहानुभूति के दो फूल चढ़ा जाएँगे! कोई यह नहीं कहेगा कि 'हमारा' कोई चला गया। लोग यही कहेंगे कि बेचारा बाहर का था, भला आदमी था, अब नहीं रहा!

2. 'अकाल और उसके बाद' कविता का निर्माण 27 मात्राओं की पंक्तियों से हुआ है। 16 और 11 मात्रा पर यति है। अंत में लघु है। यह सरसी छंद है। चौपाई का एक चरण (16 मात्रा) और दोहा का सम चरण (11 मात्रा) मिलाने से सरसी छंद बनता है।

   कई दिनों तक चूल्हा रोया = 16 मात्रा = चौपाई का एक चरण

   चक्की रही उदास = 11 मात्रा = दोहा का सम चरण

   इसी ढाँचे पर इस कविता की आठों पंक्तियाँ गठित हैं।

3. 'बहुत दिनों के बाद' कविता की रचनात्मक योजना पाँच इन्द्रियों के आधार पर बनायी गयी है। नागार्जुन की यह कविता सुगठित है। अनुभूतियों के पाँच रूपों और स्रोतों के परम्परागत आधार पर रची गयी यह कविता कुल छह चरणों में है। पाँच में पाँचों इन्द्रियाँ इस क्रम से सक्रिय हैं – आँख, कान, नाक, त्वचा और जीभ। छठे चरण में उपसंहार है।

   नागार्जुन कहते हैं कि अब की बार बहुत दिनों के बाद मैंने अपने गाँव की धरती पर आकर जाना है कि गंध, रूप, रस, शब्द और स्पर्श को जी–भर कर भोगने का असली मतलब क्या होता है? मैंने 'मौलसिरी' से गंध को, 'पकी–सुनहली फसलों' से रूप को, 'तालमखाना और गन्ने' से रस को, 'किशोरियों की कोकिल–कंठी तान' से शब्द को और 'चन्दनवर्णी धूल' से स्पर्श को महसूस किया है। इन्द्रियों की सार्थकता मानो यहीं लौटकर महसूस हुई है।

इस तरह यह कविता एक सुस्पष्ट रचनात्मक ढाँचे में रची गयी है।

4. 'कालिदास' कविता में विचार किया गया है कि साहित्य में वर्णित भावनाओं का सम्बन्ध स्वयं रचनाकार से किस तरह का होता है? रचना में यदि दुःख वर्णित है तो क्या इसका सम्बन्ध कवि के निजी दुःख से होता है? यहाँ कवि के अनुभव को कविता में तलाशने की कोशिश की गयी है। इस कविता में इस बात का पक्ष लिया गया है कि अनुभूति की निजता के बिना प्रभावशाली अभिव्यक्ति सम्भव नहीं है। यहाँ 'परकाया प्रवेश' जैसे सिद्धांतों पर भी विचार की गुंजाइश है। दूसरे के व्यक्तित्व में समाकर उसके भावों को समझने की कोशिश को 'परकाया प्रवेश' कहते हैं। मानो कवि अपने पात्रों के व्यक्तित्व में प्रवेश करके उनकी अनुभूतियों को समझता है।

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. ख
ii. क
iii. ख
iv. घ
v.ग
vi. ख
vii.घ
viii.क
ix.ग
x.घ
xi.घ

14.4 उपयोगी पुस्तकें

1. नागार्जुन की कविता अजय तिवारी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. प्रतिनिधि कविताएँ – नागार्जुन, सं.– नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. काव्य–भाषा और नागार्जुन की कविता – कमलेश वर्मा, पेरियार प्रकाशन, पटना